

Code No.: MFVJ-23

Total No. of Questions : 8

Total No. of Printed Pages : 1

स्नातकोत्तरपरीक्षा:- २०१५

एम्.ए. - विद्वदुत्तमा - प्रथमवर्षम्

शास्त्रम् - जैनसिद्धान्तशास्त्रम्

भाग: - I, पत्रिका - III

विषय: - समयसार:

दिनाङ्क: - 27-3-2015

गरिष्ठाङ्का: - ८०

समय: - 10.00 A.M. to 1.00 P.M.

Max. Marks - 80

-
- | | |
|---|----|
| I. समयसारग्रन्थस्य मङ्गलपद्यं विलिख्य विवृणुत। | 10 |
| II. अज्ञानेन कर्म: कथं प्रतिभाति? ग्रन्थोक्तदिशा विचारयत। | 10 |
| III. ज्ञानमात्रादेव बन्धनिरोद: कथं? निरूपयत। | 10 |
| IV. समयसार ग्रन्थकारस्य कालदेशादिकं लिखत। | 10 |
| V. "निमित्तनैमित्तिकभावेनापि न कर्तास्ति" गाथा सूत्रेण निरूपयत। | 10 |
| VI. आत्मन: केनविधिनायमास्रवेभ्यो निर्वतत: निरूपयत। | 10 |
| VII. भावनिर्जरा स्वरूपं ग्रन्थानुसारेण विवृणुत। | 10 |
| VIII. "ज्ञानि ज्ञानस्यैव कर्ता" गाथासूत्रेण विवेचयत। | 10 |
-